

दि कर्मिक पोस्ट

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

Global
School Of
Excellence,
Obedullaganj

वर्ष : 12, अंक : 34

(प्रति बुधवार),

इन्दौर, 19 अगस्त 2026 से 25 अगस्त 2026

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस पर किया ध्वजारोहण

समानता के मूल भाव और एक देश-एक विधान-एक निशान के विचार को धरातल पर उतारने के उद्देश्य से लागू की जा रही समान नागरिक संहिता -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी) मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस पर भोपाल के लाल परेड ग्राउंड के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में ध्वजारोहण किया। इससे पहले राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम का गायन हुआ। ध्वजारोहण के बाद राष्ट्र गान जन-गण-मन की धुन बजाई गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने परेड का निरीक्षण किया और परेड सलामी ली। परेड में सशस्त्र दलों ने हर्ष फायर किया और पुलिस बैंड ने राष्ट्रगान जन-गण-मन तथा देश भक्ति गीतों की धुनों से वातावरण में राष्ट्र प्रेम, और समर्पण के भाव का संचार किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं तथा प्रदेशवासियों के नाम संदेश दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने

प्रदेशवासियों को संबोधित करते हुए स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों को सर्वप्रथम आदरांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्वाधीनता के संग्राम में रानी दुर्गावती, रानी अवंती बाई, महाराजा छत्रसाल और टंट्या मामा भील से लेकर शहीद चंद्रशेखर आजाद तक मध्यप्रदेश के अनगिनत वीर सपूतों ने अपनी आहुतियां दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृतज्ञ प्रदेश सभी को श्रद्धापूर्वक नमन करता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की भूमि समानता, समरसता और समभाव की भूमि है। भगवान श्रीराम से लेकर भगवान श्रीकृष्ण तक और संतो से लेकर महापुरुषों तक, सभी ने समानता का संदेश दिया है। संविधान की इसी मूल भावना के अनुरूप, ऐतिहासिक कदम उठाते हुए मध्यप्रदेश में समान नागरिक संहिता कानून लागू कर रहे हैं। हमने एक



देश- एक विधान- एक प्रधान- एक निशान के विचार को धरातल पर उतारकर, सबके लिए एक जैसा कानून लागू कर रहे हैं। समान नागरिक संहिता एक भेदभावपूर्ण व्यवहार को समाप्त कर समरसता का संचार करेगी। यूसीसी महिलाओं को अत्याचार और अन्याय से मुक्ति दिलाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि समरसता के संत गुरु रविदास जी महाराज की 650वीं जयन्ती का उत्सव प्रदेश में 18 अगस्त से मनाया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार गरीबों और वंचितों की सरकार है। समाज के सभी वर्गों के कल्याण के साथ ही तेज गति से विकास करते हुए हम निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। लोक का तंत्र पर भरोसा ही सुशासन की पहली सीढ़ी है। जन-कल्याण यदि साध्य है तो, जन-विश्वास और जन-संवाद उसके साधन। इसी लक्ष्य के साथ राज्य सरकार ने न देरी, न दूरी के लक्ष्य के साथ मुख्यमंत्री जन-

विश्वास अभियान 07 अगस्त से आरंभ किया है, अभियान का प्रथम चरण 08 जनवरी तक संचालित किया जाएगा। प्रदेश में 17 धार्मिक एवं सांस्कृतिक लोकों का निर्माण किया जा रहा है मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राजाभोज द्वारा स्थापित भोजशाला, सदियों तक ज्ञान-विज्ञान-अनुसंधान और संस्कृत भाषा का सबसे प्रखर केन्द्र रही है। भोजशाला में राज्य सरकार, भव्य सरस्वती लोक बनायेगी तथा यहां राजा भोज संस्थान की स्थापना की जायेगी। मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक अभ्युदय के लक्ष्य के साथ, 17 धार्मिक एवं सांस्कृतिक लोकों का निर्माण किया जा रहा है। एकात्म धाम परिसर में 2400 करोड़ रुपये के विकास कार्य प्रगति पर हैं। श्रीराम वन गमन पथ एवं श्रीकृष्ण पाथेय का निर्माण राज्य की अध्यात्मिक

समृद्धि को वैश्विक मंच पर नई पहचान देगा और भावी पीढ़ियों को अपनी विरासत से जोड़ेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवाओं के लिए बड़ा ऐलान करते हुए वर्ष 2027 को युवा कल्याण को समर्पित करने की बात कही। युवाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, उद्यमिता एवं स्वरोजगार, रोजगार, स्टार्ट-अप, खेल-कला-संस्कृति और नेतृत्व क्षमता विकास को 7 प्रमुख स्तंभों में शामिल किया गया है। अगले एक वर्ष में एक लाख से अधिक युवाओं को आईटीआई तथा हर साल 10 हजार युवाओं को ग्लोबल स्किल पार्क में प्रशिक्षण देने की योजना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में 8 हजार स्टार्ट-अप संचालित हैं। इनकी संख्या 12 हजार से अधिक करने और 100 नए इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है।

भोपाल में ई-वेस्ट के निपटारे पर NGT में सुनवाई

भोपाल नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने राजधानी भोपाल में इलेक्ट्रॉनिक कचरे (ई-वेस्ट) के कथित अवैज्ञानिक निस्तारण एवं अनौपचारिक प्रसंस्करण से पर्यावरण और जनस्वास्थ्य को होने वाले संभावित नुकसान से संबंधित शिकायत पर सुनवाई की। शिकायत में कहा गया कि इससे जनस्वास्थ्य को खतरा है। अगली सुनवाई 31 अगस्त को होगी।

मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति अरुण कुमार त्यागी, न्यायिक सदस्य डॉ. ए. सेंथिल वेल ने की। भोपाल के पर्यावरणविद् नितिन सक्सेना ने 6 मई को शिकायत दर्ज कराई थी। मामले में एनजीटी ने एक पुराने मामले में निर्धारित सिद्धांतों के अनुरूप अधिकरण के स्वतः संज्ञान संबंधी अधिकार क्षेत्र के प्रयोग

के लिए किया। शिकायत में आरोप लगाया गया कि भोपाल में प्रतिदिन बड़ी मात्रा में ई-वेस्ट उत्पन्न होता है। जिसमें से केवल सीमित मात्रा का ही वैज्ञानिक तरीके से प्रसंस्करण एवं निस्तारण किया जा रहा है। शेष ई-वेस्ट के अनधिकृत कबाड़ कारोबारियों और अनौपचारिक रीसाइक्लिंग इकाइयों के माध्यम से निस्तारण/प्रसंस्करण किया जा रहा है। इलेक्ट्रॉनिक कचरे को खुले में जलाने अथवा अवैज्ञानिक तरीके से तोड़ने से सीसा, पारा, कैडमियम और क्रोमियम जैसी हानिकारक धातुओं एवं पदार्थों का उत्सर्जन हो सकता है। इससे वायु, मिट्टी, भू-जल प्रभावित होने और जनस्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका है।

आवेदक सक्सेना ने वायु गुणवत्ता में गिरावट, मिट्टी एवं भूजल प्रदूषण, संभावित स्वास्थ्य प्रभावों, अनधिकृत ई-वेस्ट प्रसंस्करण इकाइयों और भोपाल में स्थापित ई-वेस्ट क्लिनिक के वर्तमान में प्रभावी रूप से संचालित नहीं होने सहित कई मुद्दे अधिकरण के समक्ष उठाए। साथ ही उच्च स्तरीय संयुक्त जांच समिति गठित करने, अनधिकृत ई-वेस्ट प्रसंस्करण इकाइयों की पहचान कर कार्रवाई करने, ई-वेस्ट क्लिनिक को पुनः प्रभावी रूप से संचालित करने, पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति का आकलन एवं वसूली करने, संग्रहण केंद्र एवं अधिकृत री-साइक्लरों की व्यवस्था करने, जनजागरूकता अभियान चलाने की भी मांग की।

भोपाल में टेरिटोरियल फाइट में गई शावक की जान



भोपाल (एजेंसी) भोपाल के पास समरधा जंगल में बाघ के जिस शावक का शव रविवार को मिला था, उसका सोमवार को दाह संस्कार कर दिया गया। प्रारंभिक जांच में टेरिटोरियल फाइट (क्षेत्रीय वर्चस्व) में बड़े बाघ द्वारा शावक पर हमला करना सामने आया है। पोस्टमार्टम में मृत शावक के शव के सभी अंत सुरक्षित मिले हैं।

रायसेन रोड स्थित हरिपुरा गांव की फॉरेस्ट चौकी के पास में बाघ का शव

मिला था। शावक की उम्र करीब एक साल थी। गर्दन पर चोट के निशान भी मिले थे। ऐसे में आपसी संघर्ष की आशंका थी। वन विभाग के अधिकारियों की मौजूदगी में विशेषज्ञ वन्यजीव चिकित्सक डॉ. प्रशांत देशमुख और डॉ. अमित ओढ़ ने मृत बाघ के शव का पोस्टमार्टम किया। इस दौरान बाघ के सभी अंग सुरक्षित मिले। वहीं, शावक की मृत्यु का कारण बड़े बाघ के टेरिटोरियल फाइट से होना सामने आया। डीएफओ लोकप्रिय भारती ने बताया कि पोस्टमार्टम के बाद निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार, शवदाह कर दिया गया। बाघ एक्सपर्ट राशिद नूर ने बताया, बाघ शावक की मौत की वजह टेरिटोरियल फाइट बताया जा रहा है। अभी तक भोपाल में टाइगर के आपसी संघर्ष के मामले नहीं आए हैं। ऐसे में भोपाल में ऐसा पहला मामला है। जिस बाघ ने शावक पर हमला किया, संभवतः वह रायसेन के जंगल में आया था। एक्सपर्ट नूर ने बताया कि रायसेन जंगल में पेड़ों की अवैध कटाई, निर्माण की वजह से जंगली जानवर भोपाल की सीमा में आ जाते हैं। ऐसे में संभव है कि वयस्क बाघ अपना क्षेत्रीय अधिकार जमाने के लिए यहां आया और उसका बाघ शावक से सामना हो गया।

गंगा की तलछट में 'फॉरएवर केमिकल्स' का छिपा जखीरा, सिर्फ 1% पीएफएएस पकड़ पा रहे हैं वैज्ञानिक



लखनऊ। गंगा के पानी के नीचे एक ऐसा अदृश्य खतरा छिपा है, जिसे वैज्ञानिक अब जाकर समझना शुरू कर रहे हैं। यूरोप और भारत के शोधकर्ताओं के एक अध्ययन ने चेतावनी दी है कि मौजूदा वैज्ञानिक जांच पद्धतियां नदी की तलछट में मौजूद पीएफएएस (पर-एंड पॉलीफ्लुओरोएल्किल सबस्टेंसेज), जिन्हें फॉरएवर केमिकल्स भी कहा जाता है, उसका केवल एक प्रतिशत ही पहचान पा रही हैं। इससे उस नदी में प्रदूषण के वास्तविक स्तर को लेकर गंभीर सवाल उठते हैं, जिस पर दुनिया की लगभग सात प्रतिशत आबादी निर्भर है।

पीएफएएस कृत्रिम रसायनों का एक समूह है, जो मुख्य रूप से कार्बन और फ्लोरीन से मिलकर बना होता है। इनका उपयोग नॉन-स्टिक बर्तनों, कपड़ों और खाद्य पैकेजिंग जैसी अनेक रोजमर्रा की वस्तुओं में किया जाता है। कार्बन और फ्लोरीन के बीच अत्यंत मजबूत रासायनिक बंधन होने के कारण ये रसायन उत्पादों के नष्ट हो जाने के बाद भी नदियों, मिट्टी और यहां तक कि मानव रक्त में लंबे समय तक बने रहते हैं। पीएफएएस के संपर्क को कैंसर, थायरॉयड संबंधी गड़बड़ियों, प्रतिरक्षा तंत्र के कमजोर होने तथा प्रजनन और भ्रूण के विकास संबंधी समस्याओं से जोड़ा गया है। जनवरी, 2026 में पत्रिका एनवायरमेंट इंटरनेशनल में प्रकाशित इस अध्ययन का उद्देश्य उत्तराखंड में ऋषिकेश और रुड़की के बीच गंगा के 58 किलोमीटर लंबे हिस्से के 14 स्थानों से एकत्र किए गए तलछट के नमूनों में पीएफएएस की जांच करना था।

शोधकर्ताओं ने चार पारंपरिक जांच विधियों का उपयोग किया। इनमें लक्षित (टारगेटेड) और गैर-लक्षित (नॉन-टारगेटेड) विश्लेषण के लिए विश्वभर में प्रचलित लिक्विड क्रोमैटोग्राफी-टैंडम मास स्पेक्ट्रोमेट्री (एलसी-एमएस/एमएस) तकनीक शामिल थी। इसके साथ ही उन्होंने नमूनों में मौजूद एक्सट्रैक्टबल ऑर्गेनिक फ्लोरीन (ईओएफ) यानी कुल

फ्लोरीनयुक्त कार्बनिक रसायनों का समग्र माप भी किया।

इसके बाद ईओएफ की कुल मात्रा की तुलना उन पीएफएएस रसायनों में मौजूद फ्लोरीन से की गई, जिनकी पहचान मौजूदा तकनीकों से संभव है। अध्ययन की प्रमुख लेखिका और ऑस्ट्रिया के ग्राज विश्वविद्यालय की शोधकर्ता डॉ. विक्टोरिया मूलर कहती हैं कि नतीजों में दोनों के बीच चौंकाने वाला अंतर सामने आया। इसे वैज्ञानिक भाषा में फ्लोरीन मास बैलेंस का अंतर कहा जाता है।

डॉ. मूलर ने डाउन टू अर्थ को बताया कि पारंपरिक लक्षित विश्लेषण से नमूनों में केवल 16 ज्ञात पीएफएएस की पहचान हो सकी। इनकी सांद्रता 0.02 से 5.3 नैनोग्राम प्रति ग्राम तलछट थी, जबकि कुल ईओएफ की मात्रा 180 से 780 नैनोग्राम प्रति ग्राम के बीच थी। गंगा की निचली धारा के कुछ स्थानों पर यह मात्रा ऋषिकेश के ऊपरी हिस्से की तुलना में लगभग पांच गुना अधिक थी। इससे संकेत मिलता है कि तलछट में बड़ी मात्रा में ऐसे फ्लोरीनयुक्त रसायन मौजूद हैं, जिनकी पहचान मौजूदा जांच तकनीकें नहीं कर पा रही हैं।

पॉलीफ्लुओरोएल्किल

सबस्टेंसेज यानी स्थायी रसायन की संरचना ऐसी होती है जो कई दशकों तक नहीं टूटते, अब यह रसायन गंगा नदी में पहुंच रहे जो करोड़ों लोगों के जीवन का आधार है। अध्ययन कई गंभीर संकेत देता है। पहला, गंगा में मौजूद पीएफएएस के अधिकांश प्रकारों की पहचान आधुनिक जांच तकनीकों से नहीं हो पा रही है। इससे प्रदूषण के वास्तविक स्रोतों का पता लगाना कठिन हो जाता है, हालांकि अध्ययन कुछ संकेत जरूर देता है। उदाहरण के लिए, सिडकुल (स्टेट इंफ़ास्ट्रक्चर एंड इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन ऑफ उत्तराखंड लिमिटेड) औद्योगिक क्षेत्र के आसपास लिए गए नमूनों में फ्लोरीनयुक्त प्रदूषण का स्तर, गंगा की ऊपरी धारा की तुलना में लगभग दोगुना पाया गया। इस क्षेत्र में दवा, प्रसाधन सामग्री और अन्य विनिर्माण इकाइयां संचालित होती हैं। अध्ययन के अनुसार, बिना उपचार के छोड़ा गया शहरी कचरा और सीवेज भी इस प्रदूषण के संभावित स्रोत हो सकते हैं।

अध्ययन से दूसरी बड़ी चिंता पीएफएएस प्रीकर्सर रसायनों की मौजूदगी को लेकर सामने आई। डॉ. विक्टोरिया मूलर बताती हैं, प्रीकर्सर पीएफएएस ऐसे रसायन हैं, जो समय के साथ बदलकर अंतिम (टर्मिनल) पीएफएएस में परिवर्तित हो जाते हैं। ये अंतिम पीएफएएस अत्यंत स्थायी होते हैं और सामान्य पर्यावरणीय परिस्थितियों में आगे विघटित नहीं होते। इसे समझने के लिए शोधकर्ताओं ने डायरेक्ट टोटल ऑक्सिडाइजेबल प्रीकर्सर असे

(डीटीओपीए) तकनीक का इस्तेमाल किया। इस विधि में रासायनिक ऑक्सीकरण के जरिए उन छिपे हुए प्रीकर्सर रसायनों को ऐसे पीएफएएस में बदला जाता है, जिन्हें मापा जा सके। नतीजों से पता चला कि कुछ नमूनों में ऑक्सीकरण के बाद सामने आए पीएफएएस, कुल फ्लोरीनयुक्त प्रदूषण का 26 प्रतिशत तक हिस्सा थे। हरिद्वार के पास स्थित एक नमूना स्थल (जी6) पर ऑक्सीकरण के बाद पहचाने जा सकने वाले पीएफएएस की मात्रा 308 नैनोग्राम प्रति ग्राम सूखी तलछट बढ़ गई। अध्ययन की प्रमुख लेखिका डॉ. विक्टोरिया मूलर और सह-लेखक, आईआईटी रुड़की के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के शोधकर्ता सौरभ दीक्षित ने डाउन टू अर्थ को बताया कि इससे स्पष्ट होता है कि गंगा में पीएफएएस प्रदूषण केवल आज दिखाई देने वाले रसायनों तक सीमित नहीं है। तलछट में ऐसे रसायनों का एक छिपा हुआ भंडार भी मौजूद है, जो समय के साथ पीएफएएस में बदल सकता है। उनके अनुसार, बाढ़, ड्रेजिंग, मानसून के दौरान तेज जल प्रवाह या तलछट में किसी भी तरह की हलचल के समय यह प्रदूषित तलछट दोबारा पानी में मिल सकती है। इससे प्रीकर्सर और उनसे बनने वाले पीएफएएस सिंचित कृषि क्षेत्रों,

मत्स्य संसाधनों और बाढ़ प्रभावित मैदानों तक फैल सकते हैं। हालांकि यह बताना संभव नहीं है कि ये प्रीकर्सर कितनी तेजी से पीएफएएस में बदलेंगे। यह पूरी तरह पर्यावरणीय परिस्थितियों, सूक्ष्मजीवों की सक्रियता, ऑक्सीजन की उपलब्धता, सूर्य के प्रकाश, तलछट में होने वाली हलचल और उसके दोबारा पानी में आने जैसी स्थितियों पर निर्भर करता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि तलछट में ऐसे पीएफएएस रसायन जिनकी रासायनिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होती है यानी छोटे (शॉर्ट-चेन) और अत्यंत (अल्ट्राशॉर्ट-चेन) पीएफएएस का प्रभुत्व था। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि लंबे-शृंखला वाले पीएफएएस पर स्टॉकहोम कन्वेंशन ऑन पर्सिस्टेंट ऑर्गेनिक पॉल्यूटेंट्स जैसे अंतरराष्ट्रीय समझौतों के तहत प्रतिबंध लगाए जाने के बाद इन्हें छोटे-शृंखला वाले रसायनों को उनके विकल्प के रूप में अपनाया गया। आमतौर पर माना जाता है कि छोटे-शृंखला वाले पीएफएएस अपेक्षाकृत सुरक्षित हैं, क्योंकि वे मानव शरीर में कम मात्रा में जमा होते हैं। लेकिन डॉ. मूलर चेतावनी देती हैं कि उनकी अत्यधिक गतिशीलता, लंबे समय तक पर्यावरण में बने रहने की क्षमता और व्यापक फैलाव ऐसे नए पारिस्थितिक जोखिम पैदा कर सकते हैं, जिन्हें नियंत्रित करना कठिन हो और जिनमें से कुछ अपरिवर्तनीय भी हो सकते हैं।

लाल किले से पीएम मोदी ने किया खेल प्रतिभागों को तराशने का ऐलान

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए 2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए भारत की मजबूत दावेदारी को एक बार फिर दोहराया है।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत को ओलंपिक में अपनी भागीदारी बढ़ाने के साथ-साथ उन सभी खेलों और स्पर्धाओं पर विशेष ध्यान देना होगा, जिनमें देश की मौजूदगी अब तक बेहद कम रही है या बिल्कुल नहीं है। प्रधानमंत्री ने कहा कि ओलंपिक में लगभग 40 खेल और 325 से 350 स्पर्धाएं होती हैं, लेकिन भारत आज भी इनमें से एक बहुत बड़े हिस्से में भाग नहीं ले पाता है और कई खेलों में हमारे खिलाड़ी क्वालिफाई तक नहीं कर पाते हैं।



अल नीनो से बढ़ा समुद्र का जलस्तर, 2026 में फिर बढ़ी चिंता

नई दिल्ली। अल नीनो और ला नीना दुनिया के मौसम और जलवायु को प्रभावित करने वाली बड़ी प्राकृतिक घटनाएं हैं। अल नीनो के दौरान प्रशांत महासागर के भूमध्यरेखीय हिस्से का पानी सामान्य से अधिक गर्म हो जाता है। इसके उलट ला नीना में यह पानी सामान्य से अधिक ठंडा होता है। इन घटनाओं का असर केवल समुद्र के तापमान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि दुनिया के तापमान, बारिश और समुद्र के बढ़ते जलस्तर पर भी पड़ता है।

जर्नल ऑफ जियोफिजिकल रिसर्च ओशनस पत्रिका में प्रकाशित एक नए अध्ययन में 2014-16 और 2023-24 के दो मजबूत अल नीनो घटनाक्रमों की तुलना की गई है। शोधकर्ताओं ने पाया कि दोनों घटनाओं के दौरान दुनिया के औसत समुद्री जलस्तर में बढ़ोतरी हुई। हालांकि दोनों बार इसके पीछे कारणों और अलग-अलग क्षेत्रों के योगदान में काफी अंतर था। शोध के अनुसार, 2014-16 के अल नीनो के विकास के दौरान दुनिया का औसत समुद्री जलस्तर करीब 9.16 मिमी बढ़ा। वहीं, 2023-24 के अल नीनो के दौरान यह बढ़ोतरी करीब 7.70 मिमी रही। पहली नजर में 9.16 मिलीमीटर की बढ़ोतरी ज्यादा लगती है, लेकिन 2023-24 की घटना कम समय में हुई। इसलिए उस दौरान समुद्र के जलस्तर बढ़ने की गति काफी तेज थी। वैज्ञानिकों के लिए यह बात खास महत्व रखती है, क्योंकि समुद्र का जलस्तर तेजी से बढ़ने पर तटीय इलाकों पर दबाव भी तेजी से बढ़ सकता है। समुद्र का जलस्तर बढ़ने के दो प्रमुख कारण होते हैं। पहला है समुद्र के पानी का गर्म होकर फैलना। इसे स्टेरिक समुद्री स्तर वृद्धि कहा जाता है। दूसरा कारण है जमीन पर जमा पानी का समुद्र में पहुंचना। इसमें नदियों का पानी, जमीन में जमा पानी और बर्फ के पिघलने से निकला पानी शामिल हो सकता है। इसे बैरोस्टैटिक



समुद्री स्तर वृद्धि कहा जाता है। शोध में पाया गया कि दोनों अल नीनो घटनाओं के दौरान समुद्र का जलस्तर बढ़ाने में जमीन से समुद्र में पहुंचे पानी की भूमिका सबसे बड़ी थी। 2014-16 में कुल बढ़ोतरी में करीब 6.20 मिलीमीटर, यानी लगभग 68 प्रतिशत, बैरोस्टैटिक कारणों से हुई। 2023-24 में करीब 6.26 मिलीमीटर, यानी लगभग 81 प्रतिशत, बढ़ोतरी इसी कारण हुई। 2023-24 के अल नीनो में हिंद महासागर की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही। समुद्र के गर्म पानी के कारण इस क्षेत्र में स्टेरिक समुद्री स्तर भी बढ़ा। वैज्ञानिकों के अनुसार, इसी समय इंडियन ओशन डाइपोल (आईओडी) भी सकारात्मक स्थिति में था। आईओडी हिंद महासागर के अलग-अलग हिस्सों में समुद्र के तापमान में बदलाव से जुड़ी प्राकृतिक जलवायु घटना है। सकारात्मक आईओडी के दौरान पश्चिमी हिंद महासागर अपेक्षाकृत गर्म हो सकता है। इसका असर भारत समेत कई देशों के मानसून और बारिश पर पड़ सकता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि अल नीनो और सकारात्मक आईओडी का एक साथ

होना 2023-24 की जलवायु परिस्थितियों को और मजबूत बनाने वाला कारण रहा। दोनों अल नीनो के बीच अफ्रीका और उत्तरी अमेरिका में भी बड़ा अंतर दिखाई दिया। 2014-16 में अफ्रीका से जमीन पर जमा पानी का काफी नुकसान हुआ, जबकि 2023-24 में ऐसा प्रभाव उतना बड़ा नहीं था। उत्तरी अमेरिका में भी स्थिति बदल गई। 2014-16 में इस क्षेत्र ने समुद्र के जलस्तर में थोड़ी बढ़ोतरी में योगदान दिया, जबकि 2023-24 में इसका योगदान इसके विपरीत रहा। दक्षिण अमेरिका में बारिश की कमी 2023-24 के दौरान खास तौर पर महत्वपूर्ण रही। कम बारिश के कारण जमीन पर पानी का भंडार घटा और पानी का बड़ा हिस्सा तेजी से समुद्र तक पहुंचा। इससे समुद्र का जलस्तर बढ़ने में मदद मिली। शोध के समय उपलब्ध अनुमान के अनुसार, 2026 में एक मजबूत अल नीनो की आशंका जताई गई है। अगर यह घटना बहुत मजबूत होती है, तो दुनिया के औसत तापमान पर इसका बड़ा असर पड़ सकता है। पहले से ऊंचे वैश्विक तापमान के बीच अल नीनो तापमान को और बढ़ा सकता है।

इससे समुद्र के जलस्तर में भी तेज बढ़ोतरी की संभावना बनी रह सकती है। हालांकि अल नीनो का वास्तविक प्रभाव बारिश, समुद्री तापमान और अलग-अलग क्षेत्रों की परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। वैज्ञानिकों के लिए यह अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पता चलता है कि एक जैसी मजबूत अल नीनो घटनाएं भी समुद्र के जलस्तर पर बिल्कुल समान असर नहीं डालतीं। बारिश, जमीन पर पानी की मात्रा, समुद्री तापमान और हिंद महासागर जैसी क्षेत्रीय घटनाएं मिलकर दुनिया के समुद्रों में बदलाव की तस्वीर तय करती हैं।

2025 में जलवायु संकट और गहराया, ग्रीनहाउस गैस, समुद्र स्तर व महासागर की गर्मी रिकॉर्ड स्तर पर

मुंबई। दुनिया में जलवायु परिवर्तन का असर लगातार बढ़ता जा रहा है। साल 2025 में धरती के कई महत्वपूर्ण जलवायु संकेतकों ने नए रिकॉर्ड बनाए। ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा, समुद्र का जलस्तर और महासागरों में जमा गर्मी अब तक के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गई। यह जानकारी हाल ही में अमेरिकन मेटियोलॉजिकल सोसाइटी (एएमएस) की 36वीं वार्षिक 'स्टेट ऑफ द क्लाइमेट' रिपोर्ट में सामने आई है।

यह रिपोर्ट दुनिया के 60 देशों के 625 वैज्ञानिकों के योगदान पर आधारित है। इसमें जमीन, समुद्र, बर्फ और अंतरिक्ष से जुटाए गए आंकड़ों का अध्ययन किया गया है। रिपोर्ट पृथ्वी के बदलते मौसम और जलवायु की सबसे विस्तृत तस्वीर पेश करती है। रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ₂) की औसत मात्रा 425.6 पार्ट्स प्रति मिलियन रही। यह औद्योगिक युग से पहले के करीब 278 पार्ट्स प्रति मिलियन के स्तर से लगभग 53 प्रतिशत अधिक है। मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी अन्य प्रमुख ग्रीनहाउस गैसों का स्तर भी रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया। जीवाश्म ईंधन से होने वाला कार्बन उत्सर्जन भी 2025 में रिकॉर्ड स्तर पर रहा। अनुमान के अनुसार, यह 10.3 पेटाग्राम कार्बन प्रति वर्ष रहा। 1960 के दशक में यह आंकड़ा करीब 3 पेटाग्राम कार्बन प्रति वर्ष था। वैज्ञानिकों का कहना है कि वातावरण में इन गैसों की बढ़ती मात्रा धरती को लगातार गर्म कर रही है। 2025 का वैश्विक औसत तापमान रिकॉर्ड में दर्ज तीन सबसे गर्म वर्षों में रहा। खास बात यह है कि इस दौरान अल नीनो की स्थिति नहीं थी। इसके बावजूद तापमान बेहद ऊंचा रहा।

यूरोप में 2025 अब तक का सबसे गर्म वर्ष रहा। रूस, चीन, दक्षिण कोरिया और अर्जेंटीना में यह दूसरा सबसे गर्म साल रहा। रिपोर्ट में शामिल पांच प्रमुख वैश्विक तापमान रिकॉर्ड में एक बात समान है। साल 2015 से 2025 तक के सभी 11 साल रिकॉर्ड के सबसे गर्म 11 वर्षों में शामिल रहे।

धरती के तापमान में बढ़ोतरी का सबसे बड़ा असर महासागरों पर दिखाई दे रहा है। 2025 में वैश्विक समुद्री सतह का तापमान रिकॉर्ड में तीसरा सबसे अधिक रहा। यह 1991 से 2020 के औसत से 0.38 डिग्री सेल्सियस अधिक था। साल के दौरान दुनिया के करीब 87 प्रतिशत समुद्री क्षेत्र ने कम से कम एक बार समुद्री हीटवेव का सामना किया। इसके विपरीत केवल 26 प्रतिशत समुद्री क्षेत्र में समुद्री शीतलहर दर्ज की गई। महासागरों में बढ़ती गर्मी का असर समुद्र के जलस्तर पर भी पड़ रहा है। 2025 में वैश्विक औसत समुद्र स्तर लगातार 14वें साल रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचा। यह 1993 के औसत स्तर से करीब 111.2 मिलीमीटर अधिक था। वैज्ञानिकों के अनुसार, समुद्र के गर्म होने से पानी फैलता है और उसका आयतन बढ़ता है। इसके अलावा ग्लेशियरों और बर्फ की चादरों के पिघलने से भी समुद्र का स्तर बढ़ रहा है। वर्ष 2005 के बाद समुद्र के गर्म होने ने औसतन 1.6 मिलीमीटर और ग्लेशियरों व बर्फ की चादरों के पिघलने ने करीब 2 मिलीमीटर सालाना समुद्र स्तर बढ़ाने में योगदान दिया है।

आर्कटिक क्षेत्र में भी गर्मी का असर साफ दिखाई दिया। 2025 आर्कटिक के 126 साल के रिकॉर्ड में दूसरा सबसे गर्म वर्ष रहा। यहां तापमान वैश्विक औसत की तुलना में करीब तीन गुना तेजी से बढ़ रहा है। आर्कटिक में समुद्री बर्फ का अधिकतम विस्तार 47 साल के रिकॉर्ड में सबसे कम रहा। पुरानी बर्फ भी तेजी से खत्म हो रही है। चार साल से ज्यादा पुरानी बर्फ का क्षेत्र 2025 में केवल करीब 95 हजार वर्ग किलोमीटर रह गया, जबकि 1980 के दशक में यह लगभग 15 लाख वर्ग किलोमीटर था।

अंटार्कटिका और ग्लेशियरों की चिंता

अंटार्कटिका में 2025 अब तक का सबसे गर्म वर्ष रहा। वहां कई बर्फीली चादरों पर सतही पिघलाव सामान्य से अधिक रहा। आसपास के समुद्री क्षेत्र में बर्फ भी लगातार कम बनी रही।

दुनिया के ग्लेशियरों की स्थिति भी चिंताजनक है। भूमि आधारित ग्लेशियरों ने लगातार 38वें वर्ष बर्फ खोई। पिछले एक दशक में 1976 के बाद से ग्लेशियरों के कुल नुकसान का करीब 41 प्रतिशत हिस्सा हुआ है।

तूफानों की बढ़ी गतिविधि

2025 में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की गतिविधि भी औसत से अधिक रही। दुनिया में कुल 97 नामित उष्णकटिबंधीय चक्रवात दर्ज किए गए, जबकि 1991 से 2020 का औसत 87 था। इनमें पांच तूफान कैटेगरी 5 तक पहुंचे। अटलांटिक में आए तूफानों में हरिकेन मेलिसा बेहद शक्तिशाली रहा। इसकी अधिकतम गति 190 मील प्रति घंटा तक पहुंची। जमैका में कैटेगरी 5 तूफान के रूप में पहुंचने के बाद इसने भारी तबाही मचाई। इससे 95 लोगों की मौत हुई और कम से कम 12.2 अरब डॉलर का नुकसान हुआ। 2025 दुनिया के सबसे गर्म वर्षों में शामिल रहा, जबकि पिछले 11 साल लगातार सबसे गर्म वर्षों में दर्ज हुए। रिपोर्ट की सबसे बड़ी चिंता यह है कि जलवायु परिवर्तन के कई अलग-अलग संकेत एक साथ खराब होते दिखाई दे रहे हैं। वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों बढ़ रही हैं, महासागर गर्म हो रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है और बर्फ तेजी से पिघल रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार, एक साल के आंकड़ों से पूरी जलवायु तस्वीर तय नहीं होती, लेकिन 2025 के आंकड़े लंबे समय से जारी गर्मी के रुझान को जरूर मजबूत करते हैं। रिपोर्ट साफ संकेत देती है कि धरती की जलवायु तेजी से बदल रही है और इसके प्रभाव दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में पहले से अधिक स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।



जिनके अमर बलिदान से मिली स्वतंत्रता
उन वीरों को शत-शत नमन

नया मध्यप्रदेश

समानता का विश्वास, समावेशी विकास



नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री



‘स्वतंत्रता हमें केवल अधिकार नहीं देती, बल्कि यह कर्तव्य का स्मरण भी कराती है। आइए, हम सब मिलकर प्रदेश के समग्र विकास और समृद्धि के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का संकल्प लें।’

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

प्रदेशवासियों को

80वें स्वाधीनता
दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं



जुड़ें नए मध्यप्रदेश से

सीधा प्रसारण



@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh



@Cmmadhyapradesh
@jansamparkMP



jansamparkMP

D18014/26